धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

मार्च- 2012

* देवात्मा फरमाते हैं।
* अहं अनुराग का अनर्थ
* स्त्री और परिवार
* एक सुनहरी झलक
* विशेष होने पर भी आम
* शुभ संग्राम
* लुधियाना में सत्संग हाल का उद्घाटन
* सैक्टर 50 में भाई बहन के संबंध में सभा

देवात्मा फरमाते हैं।

4 अगस्त सन् 1927 ई०

तुम किसी भी शुभ काम के लिए सदा वफादार रहो, किसी दिक्कत तकलीफ के आने पर पीठ दिखा कर पीछे को न भाग जाओ। देवरत्न ने अपने 24 वर्ष निष्फल गंवाए। समाज की हिस्टरी में हम उसकी क्या तारीफ करें? दीवान हासामल जी के विषय में हम ने कई दफा यह कहा है कि यदि वह बेवफा हो कर न मरते, तो हम प्रति वर्ष उनकी वर्षगांठ मनाते, परन्तु अब क्या हम उनकी ख़ाक वर्षगांठ मनाएं? सभा में उनकी किस बात की प्रशंसा करें? क्या बेवफाई की प्रशंसा करें? तुम यदि आज हमें एक पैन्सिल उपहार में दो और कल उसे उठा ले जाना चाहो, तो तुम ने हम पर क्या कृपा की? कुछ भी नहीं। इसी प्रकार यदि कोई जन दान दे कर फिर उसे वापिस लेना चाहे, तो उस की ऐसी गति कृपा की नहीं, बल्कि बहुत दु:ख देने वाली होगी। यदि किसी जन का यह ब्रत हो कि मेरी जान रहती हो तो रहे, जाती है तो जावे, मेरा गला कटता है तो कट जावे, रहता है तो रह जावे, मेरी बदनामी होती हो और चाहे नेकनामी हो, परन्तु मैं हर हाल में अपने उच्च लक्ष्य के लिए वफादार रहूंगा, तो वह अवश्य सफल काम होगा। यदि ऐसा जन अकेला है और उसके विरोधी बहुत से हैं, तेा इसमें शक नहीं कि उसे बहुत सी विरोधी शक्तियों के साथ मुकाबला करना पड़ेगा, परन्तु वफादार रहने पर वह अन्त में सफल काम होगा। क्या तुम नहीं देखते कि हमारे हज़ारों विरोधी है और हमें उन सबके साथ जंग करना पड़ता है? फिर भी हमारी शक्तियां निष्फल नहीं जातीं, बल्कि इस जंग में हमारी कामयाबी का रास्ता खुलता जाता है। यह सच है कि हमें अपने मिशन के लिए जैसे योग्य आत्मा चाहिए थे, वह हमें यह देश नहीं दे सका ओर इसलिए हमारा बहुत सा परिश्रम निष्फल चला गया। परन्तु हम फिर भी बराबर अपने लक्ष्य की जय के काम में डटे रहे हैं तुम लेाग भी जो देव समाज के कर्मचारी हो, यदि हर दिक्कत तकलीफ का मुकाबला करके शुभ काम के लिए वफादार रहोगे, तो उससे जहां अपना भला करोगे, वहां देव समाज की हिस्टरी में अपना ऐसा उच्च प्रभाव डालने वाला दृष्टांत छोड़ जाओगे जो आने वाली नसलों को उभारने का कारण होगा। जो लोग अपने किसी शारीरिक सुख के पीछे, या धन, बीवी, बच्चों के पीछे जाकर अपने उच्च लक्ष्य से बेवफा बन जाते हैं, उनका कुछ नहीं बनता और वह औरों के लिए भी बुरा दृष्टान्त पैदा करते हैं। तुम्हारे लिए यदि संभव हो, तो तुम अपना उच्च दृष्टान्त पैदा करो। और जिस जिस शुभ काम के लिए तुम लोगों ने अपनी ज़िन्दगियां अर्पण की हैं, उस शुभ काम के लिए सदा वफादार रहो, इसी में बहादुरी है और इसी में भलाई है।

धर्म जीवन

खण्ड 25 अंक 3

मार्च – 2012

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

अहं अनुराग का अनर्थ

अहं अनुराग आत्मिक रोगों में सबसे अधिक सूक्ष्म, भयंकर और घातक रोग है। इस अनुराग के सम्बन्ध में जागृति या होश सर्वोत्तम बोधों में से एक है। अहं अनुराग के सम्बन्ध में जागृति या होश से शून्यता का दूसरा नाम अन्धकार है, हानि, दुख या विनाश है।

अहं अनुराग जनित पतनकारी भाव महा विनाशकारी भाव हैं। इनमें घमण्ड, "मैं" या अंहकार का नीच भाव सबसे भयानक है। भगवान की शिक्षा के अनुरसार प्रत्येक मनुष्य के अन्दर बचपन से ही यह पैदा हो जाता है।

घमण्ड अपने सम्बन्ध में घोर मिथ्या विश्वास होता है। अन्य कई मिथ्या विश्वास तो फिर भी सत्य की रोशनी में दिखाई दे जाते हैं और बहुत से मनुष्य उनसे छुटकारा पा लेते हैं, परन्तु अपने ही सम्बन्ध में मिथ्या विश्वास को देखना सब से कठिन बात है। इसलिए प्राय: हम सब छोटे बड़े मनुष्य आत्मा इस नीच भाव के प्राय: सारी उमर शिकार रहते हैं और अपनी इस अवस्था से भी प्राय: पूर्ण अज्ञानी रहते हैं।

घमण्ड अपनी "मैं" के प्यार को कहते हैं। हम अपने आपको बेहद प्यार करते हैं। अपने आपको सत्य के विरुद्ध वास्तविकता से सैकड़ों गुणा बढ़ चढ़ कर बड़ा योग्य, महान और ठीक देखते, जानते, मानते और विश्वास करते हैं। अपनी अक्ल, शक्ल, विद्या, बुद्धि, वाक् शक्ति, अपने विचार और राय और अपने विश्वासों आदि को हमेशा ठीक, सुन्दर, निर्दोष और अच्छे रूप में देखते हैं। ऐसे मिथ्या विश्वास को घमण्ड या अहंकार कहते हैं।

"मैं" का प्यार एक अजीब ज़ोरदार नशा है। इस में हम अपनी कीमत हकीकत से बेहद ज्यादा और दूसरों की कीमत वास्तविकता से कम लगाते, देखते और विश्वास करते हैं।

एक शराब के नशे में चूर व्यक्ति ने महाराज रणजीत सिंह को हाथी पर सवार देखकर चिल्ला कर भरे जलूस में खुल्लम खुला कह दिया था कि ऐ कट्टे वाले बता! कट्टे (भैंस के बच्चे) का क्या मूल्य लेना है? नशे के असर से वह कंगाल होकर भी एक धनी व्यापारी बन बैठा और एक महाराजा को हीरे जवाहारात से सुसज्जित और हाथी पर सवार देखकर भी एक कट्टे वाला या भैंस वाला देखने के लिए मजबूर हो गया था। जब अगले

दिन नशा उतरने पर उसे महाराज साहब के सामने पेश किया गया, तो उसने अपने और महाराज साहब को वास्तविक हालात में देख कर और कहा कि रात जो व्यापारी था वह तो कभी का चला गया।

शराब के नशे से अहं का नशा असंख्या गुणा अधिक विषाक्त और भयानक होता है। और यह कभी उतरता ही नहीं, किन्तु दिन प्रतिदिन कई सूरतों में बढ़ता चला जाता है और इस नशे के अधीन हम अपनी कीमत वास्तविकता से असंख्य गुणा अधिक लगा लेते हैं और दूसरों की कीमत वास्तविकता से बहुत कम लगाते हैं। हर मनुष्य आत्मा की यही कहानी है। इससे बाहर वह जा नहीं सकता।

घमण्ड के अधीन होकर अपने ऊपर अनर्थ का होना और अपनी बेहद हानि करना अनिवार्य है। गुरू महाराज ने घमण्डी मनुष्यों का ख्याल करके ही फरमाया है कि मनुष्य सब पागल हैं सिरफ़ दर्जो का फर्क है। जो पागल खाने में दाखिल हैं, वह कुछ अधिक पागल हैं और जो पागल खाने में दाखिल नहीं है वह कुछ कम पागल हैं। घमण्ड के नशे में चूर प्रत्येक मनुष्य पागल है, अन्धा है, उल्टा दृष्टा है, और मिथ्याचारी है। परन्तु हम अपने घमण्ड के अधिकार के कारण अपनी ऐसी अवस्था को तनिक भी नहीं देख पाते। घमण्ड के कारण अनर्थ का होना एक लाज़मी और जरूरी बात है।

एक शराबी ने एक महाराजा को भैंसे वाला बता कर उन पर घोर अनर्थ किया। उनका घोर निरादर और अपमान किया। महाराजा की प्रकृत अवस्था को उल्टे रूप में देखा और उनसे लाभ उठाने की बजाए हानि उठाने के लिए लाचार हुआ। हम भी घमण्ड के नशे में चूर होकर प्राय: अपने सम्पर्क में आने वाले पर घोर अनर्थ करते हैं उनके नेचर प्रदत्त अधिकार का अपहारण करते और उन पर ज़ुल्म करके उनको सताते तड़पाते हैं उनसे लाभ प्राप्त करने के स्थान में हानि करते और हानि उठाते हैं। अहं का नशा हमें अपनी और दूसरों की प्रकृत अवस्था का बोध नहीं होने देता।

एक एम०ए० तक पढ़े साहब ने अपना अनुभव गहरे दुख से बताया कि वह सेवा और हमदर्दी के भाव से एक शहरी बच्चे को जो नौंवी श्रेणी में पढ़ता था, पढाने की सेवा किया करते थे। बच्चे के पिता भी ऐसा चाहते थे। जब पढ़ाते और किसी शब्द का अर्थ बताते, तो वह बच्चा अपने आपको बुद्धिमान, बड़ा हुशियार समझ और विश्वास करके अपने सेवाकारी ओर हमदर्द शिक्षक को एक साधारण जन ख्याल करके यह प्रश्न करता कि क्या प्रमाण है कि जिस शब्द के अर्थ आप बताते हैं, वह ठीक हैं और गलत नहीं हैं? इस पर वह दयावान शिक्षक उस बच्चे को डिकशनरी दिखाते और उसे स्वयं वहां से उस शब्द के अर्थ पढ़वाते। तब जाकर उसे कुछ विश्वास होता कि इस शब्द के अर्थ ठीक ही होंगे। इस तरह एक ही वाक्य में कई शब्द बार बार डिकशनरी से उसे दिखा कर उसे विश्वास बन्धा कर पढ़ाना पड़ता। इस प्रकार जो काम दस पन्द्रह मिनट में हो सकता था, उसमें घन्टे लग जाते। वह बच्चा अपने आप को योग्य, बुद्धिमान और महान देखता था। और अपने शिक्षक को साधारण और घटिया देखता था। वह अपनी पढ़ाई के काम में भी बेहद हानि उठाता। और जो अपमान, अनर्थ और ज़ुल्म वह अपने पढ़ाने वाले

उपकारी और हमदर्द पर करता, उसका उसे तनिक भी बोध न था।

एक एक शारीरिक रोगी घमण्ड के कारण बड़े से बड़े डाक्टर को खातिर में न लाकर और उस की बात की तनिक परवाह न करके महा हानि उठाता है। एक हाई कोर्ट के जज को टी०बी० हो गई। लाहौर के बड़े डाक्टर ने उनको सलाह दी कि आप शीघ्र पहाड़ पर चले जाएं, तो आप इस रोग से बच जाएंगे। परन्तु जज साहब ने अपने घमण्ड के कारण अपनी राय और अपनी समझ को महत्व दिया। और उस बड़े योग्य डाक्टर की राय को तुच्छ समझा। कुछ महीनों के बाद वह पहाड़ पर चले गए, परन्तु तब तक रोग बहुत बढ़ चुका था और वह बच न सके।

एक और अच्छे और योग्य जन के पांव के अंगूठे में एक जहरीला काँटा चुभ जाने से सैप्टिक हो गया था। एक अच्छे डाक्टर ने अगूँठा काट देने की सलाह दी, परन्तु डाक्टर की राय न मानी गई। सैप्टिक बढ़ता गया। फिर दिखाने पर डाक्टर ने पांव कटवाने की सलाह दी। परन्तु वह जन डाक्टर की सलाह पर ध्यान न देते रहे। आखिरकार जब टांग में जहर बहुत फैल गया तो डाक्टर ने कहा कि अब तो सारी टाँग कटवाओ या जिन्दगी से हाथ धोवो। अब वह टांग कटवाने के लिए रजामन्द हुए और मुश्किल से उनकी जान बची। एक एक रोगी भी अपनी अंह प्रियता के कारण अपनी राय को डाक्टर की राय से बढ़िया समझ कर बहुत हानि उठा लेता है।

मेरे एक सहपाठी थे वह बहुत दुबले पतले थे। मैं सेर को जाया करता था मेरा शरीर सुन्दर सुडौल और बलिष्ठ था। मेरे वह सहपाठी मुझे कहते कि मुझे अपने साथ सैर को ले चला करो। वह मेरे शारीरिक स्वास्थ्य पर स्पर्धा करते थे। मैं उन्हें सैर को ले जाता। वह बहुत प्रसन्न होते। परीक्षा निकट आ गई। मेरी तैयारी न थी। इसलिए मैं परीक्षा में न बैठा। मेरे वह सहपाठी परीक्षा में सारे पंजाब में फर्स्ट आए। मैं अभी विद्यार्थी था, वह एक कालिज में एम०ए० की कक्षा को पढ़ाने लग गए। उन्होंने मुझे लिखा कि मेरे पास आ जाओ, मैं तुम्हें पढ़ा दूंगा। थोड़े दिन बाद मुझे उनका पत्र मिला, जिस में लिखा था कि वह I.A.S. की परीक्षा में सारे भारत में छठे नम्बर पर आए हैं। उस के बाद वह असिस्टैण्ट करिश्नर लग गए और उसके पश्चात् एक प्रदेश के होम सैक्रेटरी लगे। मैं उनसे पढ़ाई में लाभ उठा सकता था परन्तु मेरे घमण्ड ने मुझे उनकी योग्यताओं से लाभ उठाने से वंचित रखा। मैंने एक बहुत योग्य जन को दुबला, पतला, मामूली समझ कर उसे इतना तुच्छ समझा कि उससे कोई लाभ न उठा सका।

गुरू महाराज की अपार करूणा से उनकी रोशनी के एक एक बार मिलने पर मैंने देखा है कि मैंने हमेशा दूसरों का अपमान करके, निरादर करके और उन्हें सता तड़पा कर अपना महा नाश किया है। मैंने अपनी अहं प्रियता से अन्धा होकर अपनी जन्मदाता रोम रोम उपकारी माता को उलटे रूप में देखा है। अपनी तालीम के कारण अपने आप को बड़ा और उनको बहुत छोटा देखा और विश्वास किया है। और अपने बुरे व्यवहारों और बोलों से उन पर आघात लगाए हैं।

अपनी धर्मपत्नी को आयु, शिक्षा, बल और

स्वास्थ्य आदि में अपने से तुच्छ और हीन देख कर, उनको सारी आयु दुखी किया है। सदा अपनी ही बात को ही महत्त्व दिया। इसी तरह अपने भाई को शिक्षा आदि के विचार से अपनी तुलना में तुच्छ देखा और उनके साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया अपनी छोटी बहन को भी अपने व्यवहारों से दुखी किया। मैंने अपने घमण्ड के विष से पागल होकर सबको डंक मारे। अपने सम्पर्क में आने वालों को लताड़ा और ज़ख्मी किया अपने उपकारी, हितकारी धर्म सम्बन्धियों को भी सताया। अपने से दुर्बल गरीब जनों पर भी जुल्म किए, उनका अपमान किया। उनके ही दोष और अपराध देखता रहा। मुझे इस हकीकत का बोध न हुआ कि मेरा घमण्ड मुझ से क्या करा रहा है।

एक सभा में एक उच्च शिक्षा प्राप्त सरकारी अधिकारी ने विवश खड़े होकर पूजनीय भगवान की रोशनी मिलने पर बयान किया कि "मैं ईमानदार हूँ, रिश्वत नहीं लेता, अपनी इस खूबी से फूलकर मैं महा घमण्डी बन गया। मैं अपने किसी बड़े से बड़े अधिकारी को भी खातिर में नहीं लाता। मैं बड़े से बड़े अफसर के गले पड़ जाता हूँ। उन का अपमान कर जाता हूँ। उनको लताड़ता हूँ और उनकी परवाह नहीं करता। उफ! मेरे घमण्ड ने मुझे न अच्छा बेटा बनने दिया, न अच्छा भाई न अच्छा पति। मैं अपने पिता से भी लड़ता झगड़ता और उनके साथ बुरा सलूक करता हूँ। पत्नि का कोई अधिकार नहीं देखता। न ही मैं अच्छा पिता हूँ। मेरे डर से बच्चों में कई प्रकार की हीनता पैदा हो गई है। मैं ईमानदार हूँ" की रट ने मुझे पागल बना रखा है। उफ! घमण्ड हमारी योग्यताओं को भी दूषित कर देता है। साधारणत: मोटे पापों में फंसे मनुष्य एक एक योग्य सेवक की महिमा को नहीं देख सकते जो मोटे पापों से बचा हुआ है। इसके विपरीत वह अपनी बड़ाई को सम्मुख रखकर और सेवक की किसी साधारण कमी की रट लगा कर उसे किसी खातिर में नहीं लाते और उससे लाभ उठाने के स्थान में हानि ही उठाते हैं।

एक एक सेवक अपनी अयोग्यता के कारण भगवान देवात्मा के कर्मचारी के गुण और रूप को देख नहीं सकता। सेवक देखता है कि जैसी उच्च शिक्षा मैं रखता हूँ और एक एक परीक्षा में मैंने विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया है, पी०एच०डी० की है, विश्वविद्यालय के प्रोफैसर, विद्यार्थी मेरा सत्कार करते हैं, ऐसी कोई बात भगवान के कर्मचारी में न पाकर उसे अपने से घटिया तुच्छ और हेच देखता और विश्वास करता है। उसके गुणों के बजाए उसके अवगुण सामने लाता है। उसे बिल्कुल साधारण और तुच्छ विश्वास करता है। ऐसा ही दूसरों के पास जिकर करता है। उसके त्यागी और समर्पित जीवन से कोई लाभ नहीं उठाता, बल्कि उसे समाज के लिए हानि कारक समझता है। उस जन की समझ में यह नहीं आता कि उसका घमण्ड उसे किस लोक का बासी बना रहा है। एक एक सेवक को यह दिखाई नहीं देता कि भगवान देवात्मा के अमुक कर्मचारी ने बरसों से अपना घर का काम छोड़ा हुआ है। प्राय: अपना सारा समय वह अपनी समाज के काम में देता है, उसने भगवान के देव प्रभावों को पाकर कई पापी जनों को बदल करी समाज से जोड़ा है। प्रचार के काम में भूख, प्यास, आदि के कष्ट उठाए हैं।

सैंकड़ो हजारों रूपये दान मांग कर समाज में लाने का हेतु बना है। उसने समाज के नाना विभागों में कीमती सेवाएं की हैं। नए क्षेत्र बनाए हैं। साधन मन्दिर बनाए हैं। सस्थांए बनाई हैं देव प्रभाव दायक साधन किए हैं। एक या दूसरा उच्च भाव अपने अन्दर पैदा करने का संग्राम किया है। सैंकड़ों सभाएं कराकर अपना और दूसरों का कुछ न कुछ भला किया है। कई अच्छे लेख और गीत लिख कर अपना और औरों का भला किया है। कई नए स्थानों पर पहुँच कर देव धर्म प्रचार के द्वारा समाज के गौरव को स्थापन किया है, जबकि अमुक सेवक ने ऐसा कुछ नहीं किया। तो भी वह सेवक अपने आपको उस कर्मचारी से बड़ा, बढ़िया और महान समझता है। विशेषकर यदि किसी सेवक की आयु किसी कर्मचारी से बड़ी हो तो वह कर्मचारी को बताने, सिखाने, समझाने की अपने अन्दर आवश्यकता महसूस करता है। वह अपने आपको जीवन के विचार से बड़ा और कर्मचारी को छोटा, अपने आपको ऊँचा और महान और कर्मचारी को तुच्छ और हीन देखता है। इसलिए कर्मचारी से कुछ सुनने या सीखने के स्थान में स्वयं उसको सिखाने के लिए तैयार रहता है। ऐसा करके वह क्या अपने ऊपर, क्या कर्मचारी के ऊपर घोर अनर्थ करके महा हानि उठाता है। जिस कर्मचारी से श्रद्धा से भर कर वह कोई अध्यात्मिक कीमती मदद पा सकता था और अपना भला कर सकता था, उसकी सभाओं से प्राय: दूर दूर रह कर उलटा कर्मचारी को उपदेश देकर तृप्ति पाता हैं और अपने सच्चे भले से बेखबर और बेहोश रहता है।

गुरू महाराज ने अपने सम्बन्ध में श्रद्धावर्धक साधनों के विषय में फरमाया है कि ऐसे साधक को बार बार ऐसे जनों के प्रति श्रद्धा और सम्मान महसूस करना चाहिए कि जिन्होंने भगवान के मिशन में सेवाकारी होने के लिए उस से अधिक त्याग किए हैं और उच्च फल पैदा किए हैं, जो ऐसा नहीं कर सकता वह पूजनीय भगवान के सम्बन्ध में श्रद्धा का भाव नहीं पैदा कर सकता।

मनुष्य के घमण्ड के अधिपत्य की कहानी का यहां तक ही अन्त नहीं हो जाता। पापी, नीच, मिथ्यापरायण, संसारासक्त, मोहग्रस्त लोगों ने और तो और देवात्मा तक को भी नहीं छोड़ा और अपने घमण्ड की लपेट में उन को लेकर, उन पर और अपने ऊपर घोर अनर्थ किया है।

एक एक घमण्ड से पागल इन्सान ने देवात्मा को डाकुओं का सरदार कहा और बताया। एक एक स्त्री ने अपने पति को देव प्रभावों से उच्च परिवर्तन लाभ करते देखकर भगवान देवात्मा के आश्रम में जाकर स्यापा किया। भगवान देवात्मा को खूनी, हत्यारा, झूठा, कपटी, ठग, न जाने क्या क्या कुछ कहा गया। उन पर गोलियों से फायर किए गए। उनको अदालतों में घसीटा गया। उनके विरूद्ध हजारों ट्रेक्ट और पुस्तकें लिखी गई। यह सब मनुष्य के घमण्ड की लीला थी। ओहो! भगवान देवात्मा पर कैसा घोर अत्याचार! और अपने हित और शुभ पर कैसा घोर प्रहार! भगवान देवात्मा को केवल उन लोगों ने ही नहीं सताया कि जिनको उनकी शरण में आने का अधिकार प्राप्त नहीं था, बल्कि उनको उन मनुष्य आत्माओं ने भी बेहद सताया और तड़पाया कि जिन्होंने उनके घर में

जन्म लिया, जिन्होंने उनसे बड़े बड़े उपकार पाए, जो बड़े बड़े कर्मचारी बने, जिन्होंने बड़े बड़े त्याग किए, परन्तु अपने अहं जात घमण्ड अनुराग के कारण उन्होंने अनेक बार अपने आप को बड़ा, ठीक और उच्च देखा ओर विश्वास किया। और उनके साथ अनुचित व्यवहार करके उनको बिना पानी मछली की तरह तड़पाया। घमण्ड अनुराग के कारण मनुष्य नेचर के सर्वोच्च आविर्भाव देवात्मा को भी नहीं पहचान पाया। न केवल पहचान नहीं पाया, बल्कि उन्हें उल्टे रूप में देख कर उन पर गहरे आघात लगाए।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी के भजनों के यह पद "हमने तुम को नहीं पहचाना, सत्गुरू तुमरा मैं अपराधी" पुकार पुकार कर मनुष्य के घमण्ड की लीला को प्रगट करते हैं।

घमण्ड और अनर्थ साथ साथ चलते हैं। ओह! घमण्ड का मनुष्य पर किस कदर अभिशाप। तब बड़े सौभाग्यवान हैं वह जन जो अपने महा भयानक घमण्ड का सच्चा बोध पाते हैं और उसे घटाने के साधनों में प्रवृत होते हैं।

बलदेव सिंह

आत्मज्ञान जरूरी है

इस समय अधिकांश समय लोग शरीर की परिधि पर ही टिक गए हैं। अपने शरीर से बाहर आए तो दूसरे के शरीर में टिक गए। बस इतनी ही यात्राएं मनुष्य के जीवन में चल रही हैं। सारे उद्देश्य, लक्ष्य शरीर की पूर्ति के आसपास घूम रहे हैं। मजेदार बात यह है कि जिस शरीर के लिए सब किया जा रहा है, सबसे ज्यादा नुकसान भी उसी का हो रहा हे। 'निज तन ही निज तन को खाए' जैसी जीवनशैली हो गई। बहुत कम लोग जान पाते हैं कि आत्मा भी कोई अंग है। वास्तव में हमारी शिक्षाप्रणाली को चाहिए कि वह हर विषय के साथ कहीं न कहीं आत्मा को अवश्य जोड़ें क्योंकि बिना आत्मा का स्पर्श किए शांति नहीं मिलती। आने वाले समय में भारत जब भौतिक ऊंचाइयां छुएगा तो यहां अशांति के वे सब आयाम होंगे, जो पश्चिम में हैं। ऐसे समय यदि आत्मबोध हमारे पास हुआ तो हम कामयाब भी रहेंगे और शांत भी। शिक्षा हमे सभ्य बना रही है और सभ्यता का संबंध शरीर से है, लेकिन संस्कार मन को प्रभावित करेंगे, तब आत्मा की यात्रा आसान होगी। केवल शरीर पर टिकने से छोटी छोटी मानसिक बीमारियां आसानी से प्रवेश करती हैं और बाद में विकराल रूप ले लेती हैं। जैसे ज्यदातर क्रोध करने वाले लोग जानते हैं कि यह गलत हो रहा है। पछताते भी हैं, छोड़ना भी चाहते हैं, फिर भी क्रोध नहीं छूटता। अब जानकर भी यदि बुराई न छूटे तो समझ लें कुछ नहीं जाना गया। केवल शरीर पर टिककर समूचा जीवन नहीं जीया जा सकता, आत्मज्ञान जरूरी है। जैसे ही आत्मज्ञान प्राप्त होगा, उसके बाद हम जो भी करेंगे तो ऐसा लगेगा जैसे स्वत: हो रहा है और दुर्गुण अपने आप छूटेंगे।

(जीवन सरिता)

स्त्री और परिवार

बहुत तेज रफतार के इस युग में परिवार बिख़र रहे हैं, घरों में नर्क पैदा हो रहा है। आज तक परिवारों में पुरुषों की ओर से अत्याचार, उदासीनता और उनकी बुरी आदतें अधिकतर दुख का कारण होती थी परन्तु गरीब और अनपढ़ औरतों को छोड़कर आजकल शिक्षित स्त्रियां तो कुछ न कुछ अपने अधि कारों के प्रति जाग्रित हो गई हैं। परन्तु शिक्षा प्राप्त लडकियां भी सीमित परिवारों में लाड प्यार से पलती हैं, वह अपने अधिकारों के प्रति तो सुचेत हो जाती हैं, कई बार अपने कर्तव्यों के प्रति संवेदनशील नहीं होती और माता पिता का लाड प्यार भी कई बार उन्हें सही रस्ता नहीं दिखाता। कहां तो चाहिए था कि पढ़ लिख कर लड़कियां मनौविज्ञानिक आधार पर परिवार में समन्वय बिठाती और परिवार अधिक सुख्मय बनते, परन्तु, एक ओर अपने अधिकारों के प्रति जाग्रति, दूसरी ओर आर्थिक रूप से आत्म निर्भर होकर बहुत सी लड़कियां इतनी घमंडी हो जाती हैं और कई बार दहेज आदि के झूठे केस बनाकर या जायदाद ऐंठने के लिए ऐसे रास्ते अपनाती हैं कि सुसराल वाले रोते ही रह जाते हैं।

इसका यह अर्थ नहीं कि लड़कियों पर अत्याचार नहीं होते, या दहेज के लिए उन्हें प्रताड़ित नहीं किया जाता, वैसे ज़्यादती के केसों को छोड़कर, कुछ ऐसे मसले हैं जो लड़कियां अपनी समझ बूझ के साथ, अपनी सहनशीलता वा सेवा के साथ परिवारों को टूटने से बचा सकती हैं।

पुरुष चाहे कितना भी परिवार का महत्वपूर्ण अंग है, परन्तु स्त्री परिवार की धुरी होती है। बेशक हम कितनी भी समान अधिकारों की दुहाई दें, पर स्त्री की ज़िम्मेदारीयां कभी कम नहीं हो सकती। पुरुष कमाता है, और थोड़ी बहुत घर की ज़िम्मेवारियों में सहायता भी कर देता है तो भी औरत की ज़िम्मेवारियां कई गुणां बढ़कर हैं। वह केवल पति से ही सम्बन्धित नहीं, सास ससुर, दरानी, जेठानी, ननद और जो भी सम्बन्धी हों सबके प्रति उसकी ज़िम्मेवारी बन जाती है। इनको भी छोड़ दें, बच्चों को जन्म देना, उन्हें पालना एक मां के ही भाग्य में हैं, इससे वह कैसे मुक्त हो सकती है। इसलिए स्त्री का कोमलता भरपूर, स्नेयमयी व्यवहार ही परिवार को सुखमय बना सकता है। जिस स्त्री में इन भावों की कमी है, वह परिवार दुखों का घर बन जाता है।

आओ, अब हम देखें कि परिवार को सुखमय बनाने में स्त्री का कितना बड़ा हाथ है।

घर ऐसा स्थान है, जहां सारे दिन का थकाहार पुरूष आकर राहत अनुभव करता है। यदि घर का वातावरण खुशी भरपूर हो और पुरुष के अन्दर आते ही उसका स्वागत करने वाली स्त्री हो, थकेहारे जन को चाय वा कुछ नाश्ते द्वारा पेट पूजा के लिए सौगात पेश की जाए, तो शाम का आरम्भ आनन्द पूर्ण वातावरण से होता है। पुरुषों की प्रकृति को समझने की अवश्यकता है कि थका हुआ और भूखा पुरुष गुस्सा दिखाना शुरू कर देता है, बेशक कामकाजी औरत के लिए यह काफी कठिन होता है, परन्तु अगर कोशिश की जाए, तो इतना करना सम्भव है, फिर साथ बैठकर कुछ हल्की फुलकी बातचीत हो तो शाम सुहावनी हो जाती है।

यह ठीक कहा गया है कि घर की नुहार से गृहणी की शख़्सीयत पहचानी जाती है। चाहे कुछ न

कुछ पुरुष मदद कर भी दे तो भी मकान को घर बनाना एक सुघड़ औरत का ही काम है।

विवाह से पहले स्त्री और पुरुष बड़ी सुन्दर कल्पनाओं में खोए रहते हैं। चाव भाव से शादी हो जाती है, कुछ महीने दुनियां से बेपरवाह हो जाते हैं, अपने इस उन्माद में जिन्दगी की वास्तविकता को भूल जाते हैं। पर जब असलीयत की कठोर धरती पर पैर पड़ते हैं तो सब सपने चकनाचूर हो जाते हैं। प्यार, मोहब्बत के स्थान पर गिले शिकवे स्थान ले लेते हैं। एक दूसरे के नुक्स दिखाई देने लगते हैं। एक दूसरे से उम्मीदें बढ़ जाती हैं, जब पूरी नहीं होती तो प्यार भरी दुनियां फीकी लगने लगती है।

वास्तव में पति और पत्नी दोनों ही ज़िन्दगी के असल मकसद से नावाकिफ़ होते हैं कि मिलजुल कर उन्होंने परिवार की ज़िम्मेवारी उठानी है। अपनी इच्छाओं को कुछ न कुछ मारकर भी परिवार को सुखमय बनाना है। एक दूसरे की सहायता से अपनी शख़्सीयत को विकसित करना है। इस सब के लिए माता पिता को भी मान्सिक रूप से बच्चों को विवाह से पहले तैय्यार करना चाहिए।

कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता, प्यार से किया वही काम इज्ज़त बढ़ाने वाला होता है। पति बाहर बड़े बड़े मोरचे फतह कर लेता है, परन्तु घर में छोटी छोटी बातों पर पत्नी पर निर्भर रहना उसका स्वभाव है। सुबह अंडरवियर या तौलिया न मिले, कमीज़ का बटन टूटा हो, जुराब वा रूमाल न मिले और कोई सुबह की ज़रूरत का सामान न मिले तो उसका पारा सातवें आसमान पर पहुंच जाता है। यह गुस्सा वह जाकर अपने महतायतों पर उतारता है, पत्नी घर में और कामों के लिए उत्साह गंवा बैठती है। यदि थोड़ा सा ध्यान किया जाए तो यह सब काम रात को कुछ मिन्टों में ही हो सकते हैं, ताकि सुबह दोनों को झुंझलाहट न हो। सुघड़ ग्रहणी यह करती है, तो घर का वातावरण खुशनुमा बना रहता है।

परन्तु आधुनिक युग में अकसर लड़कियां समझती हैं कि हम नौकर नहीं कि हम पर हुकम चलाया जाए, परन्तु यह जानना अति अवश्यक है कि मर्द में एक बच्चा छुपा हाता है, उसका व्यवहार बच्चों की तरह होता है। जैसे आप बच्चों के छोटे छोटे काम करके आप अपनी बात भी उनसे मनवा सकती हो, वैसे ही पति की छोटी छोटी बातें मानकर उस से अपने मन की बात करने का मौका पा सकती हैं। प्यार के साथ अपनी दिक्कतों को भी बताया जा सकता है।

एक और महत्वपूर्ण बात है, ससुराल में पति के माता पिता वा भाई बहनों से प्यार वा सम्मान का रिश्ता रखना चाहिए। कई बार उनकी तरफ से अच्छा व्यवहार न पाकर भी यदि आप अपनी जिम्मेवारी सही ढंग से निभाते हो, तो और कोई महसूस करे या न करे, पर पति के दिल में आपका सम्मान अवश्य बढ़ जाता है। प्यार और सम्मान पति पत्नी के रिश्ते को निभाने की धुरी है।

पति पत्नी में कुछ नोक झोंक होना कुदरती है, परन्तु पति की बुराई दूसरों के पास करके आप अपने दिल का गुबार तो निकाल सकती हो, परन्तु दूसरों की ग़ल्त राय वा हमदर्दी रिश्ते में दरार डाल देती है। दूसरों से पाई झूठी तसल्ली वा सलाह रिश्ते को संवार नहीं सकती। दुनियां तो आग लगाकर तमाशा देखती है।

कई पतियों का भी यह स्वभाव होता है कि वह अपनी पत्नी की तुलना दूसरों की पत्नियों से करते रहते हैं कई बार औरों के सामने भी ऐसा करते हैं, जो पत्नी के लिए असह्य होता है और उसके स्वाभिमाान

पर चोट पहुंचाता है। पति का यह कर्तव्य है कि पत्नी की झूठी तारीफ करके उसके अंह को न बढ़ावे बल्कि उसके वास्तविक गुणों की सराहना करके उसे उत्साह दे। पति द्वारा प्रशंसा के दो शब्द पत्नी की सारी थकावट दूर कर देते हैं। यदि पत्नी घर को साफ सुथरा वा सजाकर रखती है, तो उसकी प्रशंसा अवश्य होनी चाहिए। सधारणत ऐसे प्रशंसा के दो शब्द पत्नी में नई उर्जा प्रदान करने के लिए राम बाण का काम देते हैं।

पति कमा सकता है, परन्तु घर का प्रबन्ध सुचारू ढंग से एक पत्नी ही कर सकती है। पति के आमदनी के अन्दर ही घर चलाना, जिससे परिवार की ज़रूरतें भी पूरी हों, यह सुघड़ ग्रहणी का ही काम है। कई फजूल खर्च पत्नियां पति को कर्ज़ाई कर देती हैं।

हमारे पड़ोस में एक परिवार रहता था, पति बैंक मैनेजर था, पत्नी ग्रहणी थी, उनके एक 3 - 4 साल का बेटा था, वह स्त्री इतनी फजूल खर्च थी कि कोई रेहड़ी वाला घर के सामने से निकलता तो वह उसके पास कुछ न कुछ लेती दिखाई देती। रेहड़ी वाले भी रैगुलर वहां खड़े होने लगे, पति भी उसी आदत का रोगी था, नतीजा यह हुआ कि उनकी बदली हो गई, उनके पास वहां तक जाने के पैसे नहीं थे, उन्होंने घर का फनीर्चर, मशीन आदि बेचे तो वह जाने के योग्य हुए। ऐसे पति पत्नी लड़ने झगड़ने और एक दूसरे को दोष देने के सिवा कुछ नहीं कर सकते थे। ऐसे बहुत से दम्पति होते हैं जो दोनों फजूल खर्च होकर दुखी रहते हैं।

यदि उपरोक्त बातों का ध्यान रखा जाए तो परिवार के लिए पति पत्नी वरदान बन सकते हैं। समस्याएं तो आएंगी, इन्सानी कमज़ोरिया भी हम सब में हैं, परन्तु अपनी समझ बूझ सहनशीलता, स्नेह वा सम्मान से पति पत्नी इनका हल निकाल सकते हैं। इसमें पत्नी का रोल अहम है। इस रिश्ते में प्यार से भी बढ़कर एक दूसरे के लिए सम्मान का महत्व है।

सच्चे पति और पत्नी वह जो, उच्च मेल रख प्यार बढ़ावें।

सुरजीत बराड़

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

एक सुनहरी झलक

यह उस ज़माने की बात है जब मेरे प्रिय भाई विनोद चन्द्र जी खेड़ा 1973 मे अपनी IPCL, बड़ोदा की नौकरी छोड़कर अपने सत्गुरू के कारज में सेवाकारी होने की आंकाक्षा से अम्बाला लौट आए थे। अम्बाला देव समाज गर्ल्ज़ स्कूल बंद होने की कगार पर था कि उन्होंने उसकी पुनर्जीवित करने की चाह से उसमें सेवाकारी होना शुरू किया। यह चौदह वर्ष तक निशुल्क निस्वार्थ भाव से उस की उन्नति के लिए संग्राम करते रहे। और यह स्कूल 7 बार लगातार हरियाणा का Best School घोषित किया गया। अपने श्रद्धेय माता पिता के चरण चिन्हों पर चल कर, घर से सादा भोजन खाकर, ओर 14 साल कोई नया कपड़ा आदि न बनवाकर सादगी से सुबह से रात तक सेवा कार्य में लगे रहे। समय पा कर अकसर देव समाज भवन 36 बी, के निर्माण कार्य मे भी यथायोग्य सेवाकारी होते रहे। तथा देव समाज की अन्य सेवाएं भी करते रहे जिनमें फरीदाबाद की देव समाज की ज़मीन को सरकार से वापिस छुडवाने का काम भी है। जैसे श्रद्धेय पापा जी ने अपनी सारी आयु स्त्री जाति की शिक्षा और भलाई के लिए भेंट कर दी थी, उसी प्रकार यह भी स्कूल में शिक्षा पाने वाली साधनहीन परिवारों की लड़कियों की हर प्रकार से मदद करने लगे और उनमें से बहुत सी लड़कियाँ अच्छी शिक्षा के कारण जीवन में अच्छे अवसर पाने के योग्य बन सकीं और वह अपने विनोद 'सर' के लिए बहुत कृतज्ञ अनुभव करती हैं।

उन बच्चियों में से आज मैं एक बालिका के कृतज्ञतापूर्ण व्यवहार की झलक मात्र देना चाहती हूँ। यह बालिका अत्यधिक साधाररण घर से ताल्लुक रखती थी। घर में कच्चे फर्श थे, जिनमें गोबर का पोचा लगाया जाता था। सौभाग्यवश यह देव समाज ग़ल्ज़ स्कूल अम्बाला में प्रविष्ट हो गई। फिर क्या था वहां दिन रात की मेहनत और अच्छे वातावरण से यह बालिका बहुत अच्छे अंको के साथ मैरिट में दसवीं पास कर गई। फिर देव समाज कालिज अम्बाला में पापा जी की रहनुमाई में इस योग्य बाला ने B.A. पास कर लिया। इस समय के दौरान भी वह अपने हितचिन्तक, जीवन मार्ग में सहायक विनोद 'सर' से सहायता लेती रही और सम्पर्क बनाए रखा। छोटे बहिन भाईयों की भी सहायता करती रही।

U.S.A. से एक दन्त विशेषज्ञ शादी के लिए अच्छे संस्कार वाली लड़की की तलाश में भारत आए। सुयोगवश उन्हें यह परिवार और यह कन्या पसन्द आ गई। और वह शादी के बाद U.S.A. में settle हो गई। इस लड़की के भीतर कृतज्ञता का सुन्दर भाव वर्तमान है। जिसका परिचय इसके जीवन की घटनाओं से मिलता है। इसके उस सुन्दर भाव की खुशबू से इसका ससुराल महक उठा और उन्होंने इस बालिका के मायके के पूरे परिवार को धीरे धीरे U.S.A. में ही settle करा दिया। माता पिता, तीन भाई, एक बहिन सब ही बहुत अच्छी तरह में रह रहे हैं और दोनों परिवारों के इस बच्ची के कारण बहुत ही मीठे संबंध बने हुए हैं। इस

बच्ची को अपने पिता जी से यह सुंदर भाव विरसे में मिला है। उन्हें सब "ज्ञानी जी" कहते हैं। ज्ञानी जी जब भी विनोद जी को मिलते हैं, हमेशा कहते हैं कि हमारी सारी तरक्की का कारण आप हैं। और जब भी भारत आते हैं, बिना मिले नहीं जाते।

भाई विनोद जी 1985 में एक बार अमेरिका गए, तो इस बच्ची जिसका नाम सुरिन्दर है, ने उन्हें अपने पास आने के लिए बहुत ज़ोर दिया। उन्हीं दिनों असकी delivery हुई थी, इसलिए भाई जाना नहीं चाहते थे।वह नहीं मानी और उसने ticket ही भेज दिया और फिर बहुत चाव भाव से सेवा करवाई।

उसके बाद फिर एक बार एकता और भाई दोनों के लिए ज़बरदस्ती टिकट भेज दिया और दोनों के पहुंचने पर पूरा परिवार बहुत खुश हुआ। ढेर फोटोज़ इनके साथ खिंचवाई और फिर सुन्दर ढंग से इन्हें भेंट की। तब digital camera भी नहीं था।

2005 में हम सब भाई, एकता, आशीष परिवार सहित और मैं कई states की सैर करते हुए सुरिन्दर के आग्रह पर उसके घर पहुंचे। सारे परिवार ने जिस प्यार व खुशी से हमें हाथों हाथ उठा लिया, उसका वर्णन करना मुश्किल है। हमें सबको Alka trz दिखाने ले गए जहां का टिकट भी बहुत मंहगा था। भाई को कहीं कुछ खर्च न करने देते थे। हमें बहुत दिक्कत भी महसूस हो रही थी। फिर उसके माता पिता जी ने खाने पर बुलाया तो ज़बरदस्ती हर एक को अलग अलग dollars दिए। सुरिन्दर ने रवानगी के समय बहु के लिए सोने का सैट, मेरे और एकता के लिए सोने की चेन हमें न चाहने पर लेने के लिए मजबूर कर दिया। और यह सब इसी भाव से कि सुरिन्दर और उसका परिवार उपकारी को आज तक भूला नहीं।

जहां उच्च भाव होते हैं, वहां उच्च नज़ारे पैदा होते हैं, उच्च भावों की महक से यह दुनियां महक उठती है, इसी धरती पर ही सच्चे स्वर्ग का आभास होने लगता है। लाखों ,करोड़ो विद्यार्थी आए दिन अपने उपकारी शिक्षकों से शिक्षा प्राप्त कर और फिर ढेरों व्यक्ति आसमान की ऊँचाईयों को अपनी योग्यतानुसार छूने लगते हैं, बहुत ही कम ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिन्हें अपनी खुशहाली के जश्नों में अपने कोई उपकारी याद आते हैं और उनके लिए कुछ कर गुजरना तो बहुत दूर की बात है। कितना मुबारक है, उपरोक्त बीबी सुरिन्द्र का हृदय, जिसने कृतज्ञता के सुन्दर भाव को पाकर न केवल अपना, अपने माता पिता का और अपने पति के परिवारों को उच्च खुशीयों से भर दिया है। उसने एक बार नहीं, बल्कि अनेक बार अपने उपकारियों के कर्ज़ का बोझ अनुभव किया है, बल्कि हज़ारों, लाखों रू० कुर्बान करके अपने उपकारियों के लिए सेवाकारी होकर खुशीयां प्राप्त की हैं। ऐसे सुन्दर हृदय के प्रति और उसके जन्म दाता के प्रति विवश हृदय बार बार झुक जाता है।

शशी बाला

विशेष होने पर भी आम

पद, प्रभुत्व वा ताकत अकसर मनुष्य के सिर चढ़कर बोलने लगते हैं। वह ही उसका लाभ नहीं उठाते, बल्कि उनके अपने सम्बन्धी भी अपने आपको विशेष समझने लगते हैं। उनकी पोज़ीशन का लाभ उठाकर नजायज लाभ उठाने लगते हैं। राजनैतिक क्षेत्र में देखने को आम मिलता है कि लीडरों के बच्चे उसका लाभ उठाकर नजायज़ हरकतें करते रहते हैं। अपने बाप की पोजीशन का लाभ उठाकर पुलीस को भी कुछ न समझना, नियम भंग करना, किसी नौकरी पर होकर अपने कर्तव्य पूरे न करना, ड्यूटी पर गैरहाज़िर होकर भी हाज़री लगा देना या कुछ मिन्टों वा घण्टे के लिए आकर पूरे दिन की हाज़री लगा देना, फिर भी पूरी तनख़्वाह ले लेना यह आम बात है, दूसरे लोग ऊंचे पद के डर से चुप रहते हैं, परन्तु जब वह पद नहीं रहते तो ऐसे बिगड़ैलों को भी सज़ा भुगतनी पड़ती है।

यहां हम ऐसे बच्चे का विवरण दे रहे हैं, जो बहुत पदधारी परिवार से सम्बन्ध रखकर भी जमीन से जुड़े हुए हैं। हमारा इशारा राहुल गांधी की ओर है। राजनैतिक क्षेत्र में आने से पहले भी वह पदधारी परिवार से सम्बन्धित थे, परन्तु उन्होंने अपनी दीनता नहीं छोड़ी।

ओम प्रकाश भारद्वाज, जो एक प्रसिद्ध बाक्सर रहे हैं, जिन्हें द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, उनके घर में फोन की घण्टी बजती है, राहुल गांधी बोल रहे हैं कि वह उनसे बाक्सिंग सीखना चाहते हैं। यह सन 2008 की घटना है। वह बहुत हैरान हुए कि कहीं राहुल अखाड़े में उतरने की योजना तो नहीं बना रहे, परन्तु वह जान गए कि वह आत्म सुरक्षा के लिए सीखना चाहते हैं। भारद्वाज जी मान गए, वह राहुल जी को बाक्सिंग सिखाने लगे। भारद्वाज जी को यहां राहुल गांधी को निकट से जानने, समझने का मौका था। न केवल बाक्सिंग सीख रहे छात्र के रूप में, बल्कि उस शख़्स के रूप में जिसे भारत का भावी प्रधान मन्त्री कहा जा रहा था। वह लिखते हैं। "राहुल जी, हमेशा अधिक करने के लिए तैय्यार रहते थे। वार्मअप के लिए यदि उन्हें एक राऊंड लगाने के लिए कहा जाता, तो वह तीन राऊंड लगाते थे। उन्हें ग़रूर नहीं था। जब मैंने उन्हें सिखाना शुरू किया तो मैं उन्हें सर या राहुल जी कहता था, वह कहने लगे कि कृपा करके मुझे 'सर' या 'जी' मत कहिए, राहुल कहिए। मैं आपका शिष्य हूं। एक बार मैंने राहुल से कहा कि मुझे पानी चाहिए। पास ही सेवक खड़े थे, उन्हें बुलाने की बजाय, वह खुद किचन में गए और पानी का गिलास लेकर आए। वह मुझे गुरू मानते थे। हररोज़ सीखने के बाद वह मुझे गेट तक छोड़ने आते। ऐसी विनम्रता बहुत कम देखने को मिलती है।

मां भी ऐसी थी। इन्दरा गांधी के प्रधान मन्त्री होते हुए वह खान मार्कट में खुद सब्जियां खरीदते देखी जाती थी। खान मार्किट में बरिस्ता में काफी पीने राहुल भी पहुंच जाते हैं। बाहर बुक शाप पर किताबें भी देखते हैं।

2008 में ही कामशेट स्थित निर्वाणा ऐडवैंचरज नामक एक फलांईग कल्ब में गए जो दुनियां की भीड़ से परे बंहुत शान्त वातावरण था, वहां अपने 7-8 साथियों के साथ पहुंचें, संजय राव वा उनकी पत्नी होस्ट थी, उन्होंने लिखा है कि "मुझे ताज्जुब हुआ कि वह प्लेटें उठाकर अपने साथियों को दे रहे हैं। अपनी प्लेट भी वह खुद किचन में रखकर आए।" वह हमेशा एक आम आदमी की तरह व्यवहार करते हैं।

यही कारण है कि वह गरीबों, हरिजनों के घरों में बैठकर खाना खा लेते हैं, सबके साथ ज़मीन पर बैठकर चाय पी लेते हैं। कहने वाले इसे political stunt कह सकते हैं पर आधुनिक युग में कोई उनकी नकल करने का भी साहस नहीं कर पाया।

अप्रैल 2011 में मुम्बई में वर्ल्ड कप क्रिकेट के दौरान एक दुपहिर 1.30 बजे के आसपास राहुल पिज्जा, पास्ता और मैकसीकन सलाद की दावत के लिए चौपाटी बीच पर न्यू यार्कर रेस्त्रां पहुंच गए। उन्होंने वेटर से गपशप की और खाने का खर्च वहन करने के लिए मैनेजर के आग्रह को सख़्ती से ठुकरा दिया। फिर राहुल और उनके दोस्तों ने 2,233रू० का का बिल आपस में बांट लिया।

कितनी ईमानदारी वा सादगी। ऐसा जन कल को प्रधान मन्त्री बन जाता है। और इसी प्रकार ज़मीन से जुड़ा रहता है तो भारत की गरीब जनता की अवश्य सुनी जाएगी, क्योंकि एक ओर स्पष्टता से अपनी बात को कहने का भी उनमें दम है और गरीब जनता को समझने का भी धैर्य्य है।

(दैनिक भास्कर के सौजन्य से)

जिंदगी कभी गारंटी वारंटी नहीं देती

रॉबर्ट एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में एक्जीक्यूटिव था। हर दिन जब रॉबर्ट ऑफिस जाने के लिए घर से निकलता तो उसे रास्ते में एक बेघरबार शख्स नजर आता। एक दिन रॉबर्ट के ऑफिस पहुंचते ही बॉस ने उससे कहा कि कंपनी को घाटा हो रहा है, लिहाजा उनके पास उसे नौकरी से हटाने के अलावा कोई चारा नहीं है। रॉबर्ट जानता था कि उसके लिए नई नौकरी तलाशना आसान नहीं होगा। लौटते समय उसे रास्ते मे घर से जुड़े तमाम खर्च याद आने लगे। तभी उसे वह बेघर शख्म नजर आया, जो सड़क किनारे चैन की नींद सो रहा था।

अगले दिन सुबह सैर के दौरान वह शख्स रॉबर्ट से फिर टकरा गया। उसने रॉबर्ट के लटके हुए चेहरे को देखकर उदासी का कारण पूछा, रॉबर्ट ने बताया कि उसकी नौकरी चली गई है। इस पर वह शख्स बोला, 'यह तो कोई समस्या नहीं है। दस साल पहले मेरी भी नौकरी चली गई थी।' यह सुनकर रॉबर्ट ने उससे पूछा, 'कौन कहता है मैं बेरोजगार हूं। मै। एफबीआई का मुखबिर हूं। मैं सड़कों पर गश्त करता हूं, लिखता हूं, पढता हूं।' रॉबर्ट ने उससे पूछा, :आपको यह काम कैसे मिला?' इस पर उसका कहना था, 'मसला यह नहीं है कि मुझे यह काम कैसे मिला। असल बात तो यह है कि जब मैंने अपनी पिछली नौकरी खो दी थी, तब मैंने इसे किस भाव से लिया। जब मुझे नौकरी से निकाला गया, तो मैंने अपने जनम के बारे में सोचा। मैं इसलिए पैदा हुआ, क्योंकि मुझे अपनी मां की कोख के कंफर्ट जोन से बेदखल कर दिया गया। यही जीवन है। यहां अपको हमेशा किसी न किसी कंफर्ट जोन से बेदखल किया जाएगा। यदि आप इस बात को समझते हैं और इसे एक अवसर की तरह लेते हैं, तो चीजें बेहतर से बेहतर होती चली जाएंगी।'

शुभ संग्राम

श्रीमान डी.एस. चौहान जी, श्रीमान मेहर सिंह जी एवं श्रीमान बैनी प्रसाद जी ने एक साथ जाकर दिनांक 24.1.2012 को रायपुर रानी व नाराणगढ़ के स्थानों पर संपर्क सूत्र व सभाओं द्वारा हितकर संग्राम किया जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है:-

1) **रायपुर रानी :**- श्रीमान विकास अग्रवाल जी पौत्र श्रीमान लाला बनारसी दास जी के आग्रह पर उपरोक्त धर्म सम्बन्धियों का ग्रुप श्रीमान मेहर सिंह जी की गाड़ी से प्रात: 11 बजे रायपुर रानी पहुंचा। श्री मान लाला बनारसी दास जी के परिवार के अतिरिक्त स्थानीय काफी जन जिनमें अधिकतर आढ़ती, दुकान दार व अनेकों युवको को भी श्री विकास अग्रवाल जी ने सभा के लिए आमन्त्रित किया हुआ था। सभा के बाद लाला बनारसी दास जी ने बताया कि गुरू जी के ज्येष्ठ पुत्र श्रीमान हरनारायण जी अग्निहोत्री का विवाह यहीं पर स्वामी गोविन्द राम जी की भतीजी से सम्पन्न हुआ था। यहां के मन्दिर का निर्माण सन् 1907 में हुआ था। उन्होंने यह जानकारी भी दी कि किसी समय रायपुर रानी में 70 सेवक होते थे और पाठय पुस्तकों में इसे देव समाजियों का रायपुर रानी जाना जाता था। इसलिए यह स्थान बहुत पवित्र है। परन्तु खेद का विषय है कि संपर्क और सभा सत्संग का सिलसिला टूटने के कारण यहां देव समाज का कार्य प्राय: बन्द हो चुका है और सेवकों की संख्या भी दो तीन ही रह गयी है। इस सभा में उपस्थित जनों ने इच्छा जाहिर की कि सभाओं का सिलसिला यहां पर जारी रहना चाहिये क्योंकि उन्हें आज की सभा से भगवान देवात्मा के निराले कारज व नीच जीवन से किस प्रकार से छुटकारा पाया जाता है, उन विषयों को जानने व पालन करने से जो स्वर्गीय स्थिति पैदा होती है, उस सत्यज्ञान की उपलब्धि हुई है।

2) **नारायण गढ़** : शाम की सभा श्रीमान पदम प्रकाश जी वर्मा के निवास पर की गई जिसमें उनके परिवार के अतिरिक्त श्रीमान रामेश्वर जी श्रीमान मामराज जी, एवं श्रीमान भारतभूषण जी के परिवार के 15-20 सदस्यों ने शिरकत की। सभापति श्रीमान मेहर सिंह जी ने बिल्कुल साधारण शैली में बहुत ही प्रभावशाली ढ़ंग से जीवन को खुशहाल बनाने, अपना व दूसरों का भला करने के नियमों की जानकारी दी। बच्चों को विशेष तौर पर समझाया कि हमारे सबसे बड़े उपकारी व हितकारी माता-पिता हैं उनके उपकार हमारे ऊपर ऋण हैं जो कभी उतारा नहीं जा सकता। सुखी रहने का एक ही नियम है कि हम दूसरों को सुखी करें व स्वंय कम से कम सेवा पाएं और दूसरों की सेवा अधिक करें।

लुधियाना में सत्संग हाल का उद्घाटन

बहुत ही हर्ष व उल्लास का विषय है कि हमारे माननीय धर्मसम्बन्धी श्रीमान जगजीत सिंह जी ग्रोवर ने लुधियाना में गिल रोड क्षेत्र में स्थित अपने एक पलाट की ऊपरी मंजिल पर देव समाज की सभाओं व सत्संगों के आयोजन करने के लिए एक बहुत ही सुन्दर व खुले हाल का निर्माण अपने खर्च पर किया। इसके साथ एक आवासीय कमरा, रसोई व स्नान घर भी स्थापित किया। इस हाल का विधिवत उद्घाटन एक विशाल सभा का आयोजन करके दिनांक 26 जनवरी 2012 को किया गया। श्रीमान जगजीत सिंह जी ने बहुत से धर्म सम्बन्धियों को इस उपलक्ष्य पर शामिल होने के लिए आमन्त्रित किया हुआ था। निर्धारित समय प्रात: 11 बजे तक स्थानीय जनों अनेकों धर्म सम्बन्धियों, रिश्तेदारों व गणमान्य विभूतियों के अतिरिक्त चण्डीगढ़ पंचकूला बटिंड़ा, मल्लेका, संगरूर..... आदि स्थानों से 100 के लगभग जन इस शुभ अवसर पर उपस्थित हुए।

सभापति विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी ने गुरू महाराज के श्री चरणों में सहाय प्रार्थना करते हुए इस आयोजन की सफलता हेतु आशीर्वाद प्रार्थना करने के उपरान्त श्रीमान जगजीत सिंह के गुरू मिशन के प्रति सुन्दर भावों की सराहना की और इस नि स्थान को अपने व्यय पर एक सुन्दर व आलीशान गुरू मिशन हाल मन्दिर में परिवर्तित करने पर उनको धन्य धन्य कहा। ऐसे व्यक्तित्व समाज में बहुत विरले हो होते हैं लेकिन होते बहुत भाग्यशाली हैं क्योंकि इस प्रकार के दृष्टांत कोई हितैषी व परोपकारी ही छोड़ सकता है।

माननीय सभापति जी ने अपने ब्यान में बताया कि इन्सान आत्मिक रोगी है परन्तु इस की स्वीकारोक्ति नहीं करता। शारिरिक रोग चार प्रकार से हानि करता है अर्थात् दु:ख देता है, कमजोर करता है, शकल बिगाड़ता है व अन्तत: मृत्यु लाता है। आत्मिक रोगों से इनसान बेखबर रहता है। उससे उत्पन्न घातक परिणामों से अनजान है क्योंकि विभिन्न धर्मो ने उसे आत्मा का अजर, अमर व निर्लोप रूप ही दिखाया है जबकि इसकी प्रकृत अवस्था केवल देवात्मा ने ही प्रकट की है। सुखों के आकर्षण के कारण मनुष्य नीच जीवन को बढ़ा कर आत्मा का सर्वनाश करता है यह सत्य केवल देवात्मा ने अपने दर्शन में दिखाया ही नहीं अपितु सिद्ध किया है, वह भी वैज्ञानिक आधार पर! भगवान देवात्मा की देव ज्योति में ही आत्मिक रोगों को देखा जा सकता है। इन रोगों को देखकर रोने वाला ही उनसे बच सकता है! देवात्मा ऐसे देव तेज के सूर्य है, उसके बल से ही घृणा शक्ति पैदा हो सकती है जो आत्मिक रोगों को भस्म कर सकती है। एक-एक सच्चाई को जानने व सिद्ध करने और उसके परिणाम हमारे सामने लाने के लिए विज्ञान को सैंकड़ो साल लगे।

देवात्मा का अविर्भाव भी नेचर के हजारों लाखों वर्षो के विकास क्रम में ही हुआ है। उन्होंने जो विज्ञान मूलक शिक्षा का आगाज़ किया है, दर्शन दिया है, वह यह नहीं कि केवल दूसरों के जानने व आचरण के लिए है, अपितु भगवान ने वह जीवन स्वयं जिया है। भगवान की यदि केवल एक सम्बन्ध तत्व की शिक्षा को ही जीवन में ढाल लिया जाए तो कुल विश्व के सम्बन्धों में जो नरक भरा हुआ है उसको स्वर्ग में तबदील होते देर नहीं लगेगी। क्योंकि मनुष्य जो भी चिन्ता व क्रिया करता है वह सम्बन्धों में ही करता है। सम्बन्धों के बगैर कोई वजूद अस्तित्व में नहीं रह

सकता। नर्क स्वर्ग सम्बन्धों में ही है, जीवन-मृत्यु भी सम्बन्धों में ही है। बहुत से धर्म सम्बन्धों को सारहीन व व्यर्थ बता कर उनसे विच्छेद की बात करते हैं, जो बहुत बड़ी मिथ्या व कर्तव्यवहीनता की बात है। दरअसल सम्बन्धों में जीने की व व्यवहार करने की कला से भागने की व जिम्मेवारी से टल कर ही ऐसी अवधारना पनपती है। सम्बन्धों में मधुरता, सरसता व एक रूपता कल्पना मात्र से नहीं बल्कि त्याग, सेवा व सन्मान भावों से ही सम्भव है जो इन्सान के वश की बात इसलिए नहीं कि वह अपने स्वार्थ का त्याग नहीं करना चाहता। इसलिए देवात्मा ने ही इन सत्य नियमों को जीवन में ढालने व पालने की शिक्षा दी है, तभी नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन के विकास का मार्ग खुल सकता है।

इसी सभा के दूसरे भाग में माता-पिता व संतान के सम्बन्ध में माननीय श्रीमान जी ने बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सारे विश्व को 16 सम्बन्धों में विभक्त किया है, और उनके सम्बन्ध में पाठ और विचार के साधन दिए है। इन सम्बन्धों में सबसे पहला व सबसे महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध माता-पिता का है क्योंकि वे हमारे जन्मदाता, शिक्षादाता, रक्षाकर्ता व पालन कर्ता हैं। उनके उपकार अनगिणत व बिना शर्त के होते हैं। उनका उपकारी रूप व महानता हर समय उपलब्ध करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर श्रीमान जगजीत सिंह जी वा उनके परिवार ने अपने दिवंगत दादा-दादी जी व माता-पिता की छवियों पर पुष्प मालाएं अर्पण करके उनका सम्मान किया व अपने माता-पिता एवं दादा जी के गुणों का और उनसे पाए उपकारों का श्रद्धापूर्वक वर्णन किया।

अन्य उपस्थित माता-पिता व संतान ने एक दूसरे को फूल मालाएं डालकर इस साधन को पूरा किया।

अन्त में चार बार जय ध्वानि करके इस आयोजन का समापन किया गया। श्रीमान जगजीत सिंह जी व परिवार की ओर से सब जनों को उत्तम भोजन कराया गया। इस प्रकार यह सारा प्रोग्राम बहुत उत्साह वर्द्धक था।

एव सेवक

शोक समाचार

बहुत शोक है कि श्रीमति चन्द कौर जी, धर्म पत्नी स्वर्गिय सरदार मेजर सिंह जी ढिल्लों D.S.P Police, निवासी गांव जवाहरे वाला (मुक्तसर) का अपने घर 346, फेज 11 मोहाली में 23 फरवरी 2012 को सुबह पौने 9 बजे देहान्त हो गया है। वह श्रीमति बचिन्त कौर जी (REtd. Principal) के बड़े बहन जी थे। उनकी उमर 90 साल के लगभग थी। वह अपने पीछे एक पुत्र-पुत्रवधु, पोती और बेटियों के परिवार छोड़ गई हैं।

उनका दाह संस्कार चण्डीगढ़ में उसी शाम 5 बजे किया गया। वह पुरानी सेविका थी। शुभ कामना श्रीमान बलदेव सिंह जी कर्मचारी देव समाज ने करवाई हम उनके पुत्र रजिन्द्र ढिल्लों के परिवार और अन्य सम्बन्धियों के प्रति अपने शोक और संवेदना के भाव व्यक्त करते हैं। उनके श्राद्ध की सभा 2 मार्च को उनके गृह में रखी गई है।

सैक्टर 50 में भाई बहन के संबंध में सभा

सम्बन्धों में भाई बहन का संबंध माता पिता के संबंध के बाद काफी प्रमुख माना गया है। इस संबंध की प्रमुखता को बताने के लिए और संबंध कैसा होना चाहिए इस विषय पर प्रकाश डालने के लिए रविवार 5 फरवरी को मकान नं 1617 सैक्टर 50, श्रीमान जगदीश जी के घर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सभा करवाई

सभा का आरंभ भजन के साथ हुआ जिससे सभा का माहौल बन गया। अर्चन करने के बाद सभा का आरंभ सवाल पूछ कर किया गया। उनके उत्तर से प्रभावित होकर उन्होंने एक इंसान के जीवन में संबधों को अच्छे बनाने और उनको मधुर बनाने के लिए चार महत्वपूर्ण बातें बताई।

पहली बात-एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति आदर की भावना होनी चाहिए। उनके गुणों को पहचानना चाहिए। व्यक्ति की प्रकृति अक्सर दूसरों के अवगुण देखने की है। इस बात ने मुझे एहसास करवाया कि भाई बहन के रिश्ते में आदर होना बहुत जरूरी है। कई बार मैं इस रिश्ते को taken for guranted लिया जब कि उसमें आदर की जरूरत है और गुणों को देखने की जरूरत हैं।

दूसरी बात दूसरों की मेहरबानियों को सामने लाना और उसका उपकार मानना और फिर उनके लिए कुछ न कुछ करना। भाई बहन के संबंध में इस बात की बहुत आवश्यकता होती है। हम उम्र होने के कारण भाई या बहन एक दूसरे पर भी मेहरबानी करते है, इस बात को मानना हर व्यक्ति के लिए कठिन है। और ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी था।

तीसरी बात- दूसरे के लिए त्याग की भावना, दया और हमदर्दी की भावना का होना आवश्यक है। भाई बहन के रिश्ते में इन तीनों भावनाओं का होना बेहद जरूरी है। इस संबंध में सभा में विनोद अंकल के लिए मेरा सिर बार बार झुका। अपनी बहनों के लिए प्यार और उनके त्यागों ने मुझे इस विषय पर प्रेरित किया। मुझे अपने भाई पर भी इस विषय को लेकर गर्व महसूस हुआ।

चौथी बात - अपनी कमियों और त्रुटियों को देखना। सभापति जी ने इन सभी बातों को छोटी-2 घटनाओं के द्वारा उपस्थित जनों को समझाने की कोशिश की और प्रेरित किया। भाई बहन के संबंध में इस बात पर बहुत ज्यादा ध्यान देना चाहिए क्योंकि भाई बहनों में सबसे ज्यादा झगड़ा अपनी गल्ती न नजर आने की वजह से होता है। अधिकतर हम दूसरे की गल्ती को देखते है। मैं भी इस बात से परे नहीं। काफी बार ऐसा हुआ है कि झगड़ा खत्म होने पर एहसास हुआ कि कहीं न कहीं गल्ती मेरी ही थी।

मुझे इस सभा से काफी फायदा हुआ। सभा में बैठे सब जनों ने इस सभा से लाभ उठाया। अंत में सभा में उपस्थित सभी भाई बहनों ने एक दूसरे को फूलों के हार से सम्मानित किया।

मोनिका अरोरा
(पुत्री श्रीमान जगदीष जी)

Published on 5th of the month
20
मार्च - 2012
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

अंहकार को समझ लेना ही अंहंकार मिटाने जैसा है

पूजा-पाठ, साधना-तपस्या के बाद भी एक दुर्गुण ऐसा है जिसके बचे रहने की संभावना बनी रहती है और वह है अंहकार। चूंकि अंहकार बचा रहता है, इसलिए संसार भी बचा रहता है। संसार बचा रहे पूजा के बाद भी, इसमें कोई दिक्कत नहीं है। ससार छोड़ने की जरूरत है ही नहीं, लेकिन परेशानी यह है कि पूजा के समय भी संसार साथ में चलता है। इसके मूल में अहंकार भी होता है। अहंकार इतना बरीक है कि वह त्याग में उतर जाता है, क्षमा में प्रवेश कर जाता है। कहा जाता है कि अंहकार मिटा दिया जाए, लेकिन ऐसा हो नहीं पाता। दरअसल अहंकार को समझ लेना ही अहंकार को मिटाने जैसा है। अंहकार को समझने के लिए जीवन में क्षमावृत्ति को बढ़ाया जाए। हमारे अपने लोग जब भूल करते हैं तो हम उनकी बड़ी से बड़ी भूलों को माफ कर देते हैं और दूसरों की छोटी से छोटी भूल पर भी उनके विरूद्ध निर्णय ले लेते हैं। हम क्षमाभाव को भी दो हिस्सों में बांट देते हैं- अपना और पराया। मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जिनके भीतर क्षमाभाव अधिक होता है, वे कम बीमार पड़ते हैं। ऐसा कहा जाता है कि क्रोध आए तो क्षमा से जीतो, पर कभी-कभी ऐसा करने के बाद भीतर असंतोष का जन्म हो जाता है। अपनी ही क्षमावृत्ति पर, स्वयं पर क्रोध आने लगता है। यह अंसतोष है और इसके पीछे अहंकार है। कई बार तो लोग क्षमा भी अहंकार की तुष्टि के लिए करते हैं। लोग तरीफ करेंगे, इसीइिए क्षमा कर दो। जबकि क्षमा में नि:स्वार्थभाव होना चाहिए और नि:स्वार्थभाव से जो क्षमाभाव पैदा होगा उसमें वह समझ होगी, जो हमें अहंकार को गलाने में मदद देगी।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts